10. कैरियर की तैयारी
(Preparing for Career)

किशोरों के जीवन में सर्वाधिक मुश्किल व महत्त्वपूर्ण कार्य अपने जीवन वृत्ति या कैरियर का चुनाव करना है क्योंकि कैरियर ही उनके व्यक्तित्व का निर्माण करता है। तरूण किशोर स्वयं के लिये कैरियर का चुनाव करने हेतु कई प्रश्नों से जूझता है, जैसे–मैं बड़ा होकर क्या बनूंगा, क्या करूंगा, कैसे करूंगा, कहाँ करूंगा आदि। प्राचीन समय में किशोर के लिये कैरियर का चुनाव बहुत आसान होता था, एक किशोर पुत्र अपने पिता के व्यवसाय का चुनाव करता था तो किशोरी पुत्री स्वयं को एक कुशल गृहिणी के रूप में ढ़ालने के लिये अपनी माँ का अनुसरण करती थी। तेजी से बदलते समय तथा औद्योगिक क्रान्ति ने आज युवा किशोर–किशोरियों के लिये कैरियर के विविध अवसर खोल दिये हैं। आजकल स्त्रियाँ भी कार्य क्षेत्र में आगे आई हैं तथा विविध व्यवसायों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। अतः आजकल कैरियर या व्यवसाय का चुनाव न केवल लड़कों बल्कि लड़कियों के लिये भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

कैरियर शब्द से आप क्या समझती हैं? आप सभी ने कैरियर शब्द का प्रयोग अपने जीवन में कई बार किया होगा। दैनिक जीवन में कैरियर शब्द निम्न प्रश्नों से इंगित होता है, जैसे भविष्य में आप क्या बनना चाहते हैं? समाज में स्वयं को किस रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं? कैरियर या जीवनवृत्ति या व्यवसाय से अभिप्राय जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए विविध सामाजिक–आर्थिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर उपलब्धियों को प्राप्त करना है।

जीवन वृत्ति में रुचि, पूर्व किशोरावस्था से ही जोर पकड़ने लगती है। अतः इस रुचि को पूर्ण करने के लिये किशोर कोई छोटा–मोटा काम–धंधा कर पैसा कमाने लगते हैं एवं स्वतंत्रता का आनन्द उठाते हैं। इस रुचि का केन्द्र व्यवसाय विशेष में न होकर अधिक से अधिक पैसा कमाने में होता है। इन किशोरों को पैसा जमा करने या परिवार की आर्थिक व्यवसाय में मदद करने में रुचि नहीं होती है। इनके लिये यह मात्र एक साधन है जिसका साध्य है स्वतंत्रता। अतः वे स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये काम करने के उद्देश्य से समय निकालने हेतु पढ़ाई तक छोड़ देते हैं या भावी उन्नति का विचार न करते हुए साधारण तनख्वाह वाली नौकरी कर लेते हैं। अंशकालिक नौकरियों में अधिक समय लग जाने से किशोर पढ़ाई के काम में पिछड़ जाते हैं।

एक तरूण किशोर के लिये अपने कैरियर/व्यवसाय का चयन करना वाकई बहुत कठिन कार्य होता है क्योंकि वह अपने मूल्यों (Values), रुचियों (Interests), व्यवसाय के लिये उपलब्ध अवसरों (Opportunities) एवं अपनी योग्यताओं (Abilities) में तारतम्य नहीं बिठा पाता। तरूण किशोर का दृष्टिकोण यथार्थवादी और व्यावहारिक न होकर आदर्शवादी (Idealistic) होता है एवं उसके निर्णय भी बहुधा कल्पनाओं (Fantasies) पर आधारित होते हैं। उम्र के बढ़ने एवं परिपाक के साथ–साथ किशोर अपनी क्षमताओं को पहचान कर कैरियर विशेष के लिये प्रयास करता है। व्यावसायिक चुनाव में उसका दृष्टिकोण अब यथार्थवादी एवं व्यावहारिक हो जाता है। जैसे चार या पाँच वर्ष के छोटे बालक खेल–खेल

में ही स्वयं को भावी डॉक्टर, इंजीनियर, पुलिस मैन आदि के रूप में देखते हैं किन्तु वास्तव में 11–12 वर्ष की उम्र तक आते–आते ही उन्हें पता चलता है कि उन्हें किस प्रकार के विषय पढ़ना अच्छा लगता है, तथा भविष्य में वे किस व्यवसाय को चुन सकते हैं। बड़े किशोर के लिये स्थिति तब तक चिन्ताजनक बनी रहती है जब तक उसे यह नहीं सूझता कि वह क्या कार्य करना पसंद करेगा या उसमें किस प्रकार का कार्य करने की क्षमता है। विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के बारे में वह जितनी अधिक बातें सुनता या मालूम करता है, उतना ही उसका संशय बढ़ता जाता है। विविध व्यवसायों के बारे में उसकी रुचि एवं आकुलता बढ़ जाती है कि किस व्यवसाय विशेष को वह पसंद करेगा, उसकी प्राप्ति कैसी होगी? भावी उन्नति के कितने अवसर उपलब्ध होंगे? व्यवसाय उसे पूर्ण आर्थिक व मानसिक संतोष भी दे पायेगा या नहीं? इत्यादि। इस प्रकार बड़े किशोर अभी भी ''छानबीन करने की अवस्था'' में होते हैं तथा अंशकालिक या पूर्णकालिक नौकरियों द्वारा उस काम की परख करते हैं जिसे वे पसंद करते हैं तथा उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं।

किशोर के द्वारा व्यावसायिक चयन को निम्न कारक प्रभावित करते हैं :–

1. **माता–पिता (Parents) :** माता–पिता बच्चों के लिये कैरियर के चुनाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई बार तो यह प्रभाव वंशानुगत होता है। एक व्यावसायी का पुत्र बचपन से ही अपने घर–परिवार में व्यावसायिक माहौल देख कर व्यवसाय विशेष के गुर सीख रहा होता है तथा किशोरावस्था पूरी होते–होते अपने पिता के व्यवसाय में हाथ बंटाने लगता है जैसे चित्रकार का बेटा चित्रकारी व दुकानदार का बेटा दुकानदारी के कौशल में निपुण होता है। माता–पिता द्वारा बच्चो के पालन–पोषण के दौरान दिया गया सहयोगात्मक वातावरण जैसे – उनकी रुचियों को बढ़ावा देना, उन्हें विविध प्रकार के खेल व व्यावसायिक प्रशिक्षण दिलवाने आदि से भी बच्चों की किसी व्यवसाय विशेष में रुचि जागृत हो जाती है।

माता या पिता के समाज में प्रतिष्ठित नौकरियों जैसे प्रिंसीपल, मजिस्ट्रेट, पुलिस अधिकारी आदि या प्रतिष्ठित व्यावसायिक मुकाम जैसे प्राइवेट हॉस्पिटल, साबुन उद्योग आदि होने पर ये माता–पिता बालकों के लिये आदर्श सिद्ध होते हैं। ऐसे में बालक इनसे प्रेरित होकर उसी कैरियर विशेष में अपनी रुचि प्रदर्शित कर अपने प्रयास करता है। उच्च शिक्षित माता–पिता के घर का वातावरण भी बच्चों में शैक्षणिक रुचियों व दृष्टिकोण को विकसित करता है।

2. **विद्यालय (School) :** विद्यालय में प्राप्त होने वाले अच्छे बुरे अनुभव भी किशोर/किशोरियों के कैरियर को प्रभावित करते हैं। विद्यालयी माहौल एवं शिक्षक ही बच्चों की रुचियों, क्षमताओं, व्यक्तिगत विशेषताओं को पहचान कर उनके भीतर कुछ बनने व कर गुजरने की दृढ़ इच्छा शक्ति (Strong will power) पैदा करते हैं तथा उनके भविष्य को एक आकार प्रदान करते हैं। कुछ विद्यालयों में व्यवसाय के चयन के लिये व्यावसायिक शिक्षण (Phofessional education) तथा कार्यशालाओं (Workshops) का आयोजन किया जाता है तो कहीं–कहीं पर विद्यालयों में कैरियर सलाहकार (Career counsellors) नियुक्त होते हैं जो छात्र–छात्राओं को उनकी रुचियों, अभिवृत्तियों व क्षमताओं से अवगत करा कर सही कैरियर चुनने के लिये मार्गदर्शन करते हैं।

3. **सामाजिक अपेक्षाऐ (Social expectations) :** किशोरों द्वारा व्यवसाय के चयन को सामाजिक अपेक्षाऐ भी प्रभावित करती हैं। बचपन से ही कुछ व्यवसाय इनके मन मस्तिष्क पर पुरूषोचित या स्त्रियोचित की अमिट छाप छोड़ते हैं इसीलिये अधिकांश किशोर ऐसे व्यवसाय चुनते हैं जिनमें

अधिक मेहनत या व्यावसायिक कौशल की आवश्यकता हो जैसे – डॉक्टर, इंजीनियर, कारपेन्टर, मैकेनिक, ड्राइवर, पायलट इत्यादि। किशोरियाँ ऐसे व्यवसाय चुनना पसंद करती हैं जिनमें शारीरिक श्रम कम से कम हो, बुद्धि चातुर्य दिखाने का अवसर मिले व कहीं न कहीं समाज सेवा का कुछ भाव जुड़ा हो जैसे – डॉक्टर, नर्स, अध्यापिका इत्यादि। कई बार व्यक्तिगत रुचियों या अधिक संतुष्टि या धन लाभ के कारण विपरीत व्यवसाय भी चुन लिये जाते हैं जैसे – पुरूष नर्स, महिला ड्राइवर, महिला पायलट इत्यादि।

4. **व्यक्तिगत विशेषताएँ (Personal traits) :** विविध व्यवसायों के लिये भिन्न–भिन्न योग्यताओं, कौशल एवं अभिवृत्तियों की आवश्यकता होती है। कुछ व्यवसायों के लिये कलात्मक निपुणता जैसे संगीतमय मृदुल कंठ, भाषण कौशल, चित्रकारी आदि आवश्यक होते हैं तो कुछ व्यवसायों के लिये आँखों व हाथों का उत्तम तारतम्य (Co-ordination), एकाग्रता एवं सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है (जैसे नृत्य, मूर्तिकारी, दस्तकारी आदि में), तो कुछ व्यवसायों में सफलता अर्जित करने के लिये उच्च बौद्धिक क्षमता (जैसे – चिकित्सा, वकालत आदि) या शारीरिक सौष्ठव (जैसे – विविध व्यायाम व खेल यदि) अपरिहार्य हैं। व्यक्ति विशेष की कार्यक्षमता (Efficiency) तभी बेहतर व श्रेष्ठ होगी जब उसकी उस कार्य में रुचि होगी तथा साथ ही साथ उस कार्य क्षेत्र के लिये उसमें सभी आवश्यक योग्यताएं हों। अतः किशोर–किशोरियों को सर्वप्रथम अपनी रुचि को देखकर तथा योग्यताओं को परखकर व्यावसायिक क्षेत्र का चयन करना चाहिये तथा किसी भी अर्न्तद्वन्द्व की स्थिति में कैरियर काउन्सलर की सलाह लेनी चाहिये।

5. **रोजगार के अवसर (Job opporatunities) :** व्यवसाय के चयन के लिए किसी भी क्षेत्र विशेष में रुचि होना तथा उसके अनुरूप योग्यताओं का होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उस व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिये यह भी आवश्यक है कि आपके पसंदीदा क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों। उदाहरण के लिये एक समय ऐसा था जब दसवीं या 12वीं पास करते ही बहुत आराम से नौकरी मिल जाती थी। धीरे–धीरे समय के साथ–साथ पढ़ाई की मांग व स्तर बढ़ता गया और तब प्रत्येक बालक पढ़ लिखकर डॉक्टर या इंजीनियर बनना चाहता था, फिर धीरे–धीरे कम्प्यूटर युग आया जिसने कम्प्यूटर विशेषज्ञों की पूरी फसल ही दे डाली। आज के प्रतिस्पर्धा के युग में एक तरफ तो सरकारी नौकरियाँ दिवास्वप्न मात्र रह गयी हैं तथा, चिकित्सक, इंजीनियर व कम्प्यूटर विशेषज्ञों को भी अपनी सेवाओं एवं मेहनत का पूरा–पूरा पारिश्रमिक नहीं मिल पाता, तो दूसरी तरफ आनुधिक युग ने और भी कई नये–नये व्यावसायिक क्षेत्रों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी (Biotechnology) फोरेन्सिक साइन्स, पर्यावरण विज्ञान इत्यादि को जन्म दिया है जिनमें रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं।

6. **सामाजिक–आर्थिक स्तर (Socio economic status) :** प्रत्येक व्यक्ति अपने बराबर या उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के लोगों में ही उठना–बैठना पसन्द करता है। किशोरों के कैरियर या व्यवसाय के चयन में उनके घर–परिवार व पारिवारिक सदस्यों, माता–पिता के व्यवसाय, परिवार के नियम कायदे आदि का भी बहुत योगदान होता है। प्रत्येक बच्चा अपने जीवन में स्वयं के माता–पिता से उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता है तथा उसके लिये प्रयास भी करता है। जैसे विद्यालय शिक्षक का पुत्र/पुत्री विद्यालय का प्रिन्सीपल या कॉलेज शिक्षक बनना चाहेगा तथा पुरूष नर्स या परिचारिका का पुत्र/पुत्री चिकित्सक बनना चाहेगा। इसी प्रकार से एक मजदूर के पुत्र/पुत्री के

लिये किसी कम्पनी का मैनेजर बनना दिवास्वप्न की तरह से होगा।

7. **प्रतिष्ठा (Prestige) :** किशोर/किशोरियों के द्वारा व्यवसाय विशेष को चुनने में उस कार्यक्षेत्र से उपलब्ध होनी वाली प्रतिष्ठा भी कुछ कम महत्त्व नहीं रखती है। सभी किशोर उच्च प्रतिष्ठा वाले लोकप्रिय व्यवसाय ही चुनना चाहते हैं किन्तु केवल ऊपरी चमक–दमक से प्रभावित होकर किसी भी व्यवसाय को चुन लेना कभी–कभी भविष्य में घातक भी सिद्ध होता है क्योंकि हर व्यक्ति को किसी व्यवसाय विशेष में प्रतिष्ठा मिल पाना जरूरी नहीं है। इसीलिये यह आवश्यक नहीं है कि सभी अभिनेता, अभिनेत्री, चिकित्सक या नेता आदि लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित हो।

8. **मीडिया एवं अन्तर्राष्ट्रीय वृत्ति (Media and global trends) :** आधुनिक युग में किशोर/किशोरियों को विविध व्यवसायों के लिये आकर्षित करने व प्रेरित करने में मीडिया जैसे टेलिविजन, इन्टरनेट आदि के महत्त्व को भी कम नहीं आंका जा सकता क्योंकि इन्हीं की बदौलत किशोर/किशोरियों को देश–विदेश में उभरने व पनपने वाले नये से नये क्षेत्रों के बारे में पता चलता है तथा वे इनकी चकाचौंध से प्रभावित होकर इन क्षेत्रों में प्रविष्ट हो जाते हैं। मॉडलिंग, रोमांचक खेल, संगीत मंडलियाँ आदि ऐसे ही कुछ नये क्षेत्र हैं जिनके पीछे हमारे आज के युवा दौड़ रहे हैं।

इस प्रकार आपने देखा कि किशोर/किशोरियों के द्वारा किसी भी व्यवसाय को जीवन भर को लिये चुनना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में वह आँख बंद करके कोई भी इच्छित व्यवसाय को नहीं चुन सकता। उसे चाहिये कि प्रारम्भ से ही व्यवसाय के चयन को गंभीरता से लेवे। उसे अपनी रुचियों, कौशल व क्षमताओं के अनुरूप व्यावसायिक क्षेत्र का चयन करना चाहिये। क्षेत्र विशेष के लिये उसे अपनी योग्यताओं व कमजोरियों की सूची तैयार करनी चाहिये। क्षेत्र विशेष में उपलब्ध रोज़गार के अवसरों तथा उपलब्ध होने वाले सहयोग को जाँच परख कर व्यवसाय का चयन करना चाहिये। इस कार्य की सफलता एवं पूर्णता के लिये वह अपने माता–पिता, गुरूजनों, बड़े भाई–बहनों, विद्यालय में होने वाली वार्ताओं, कार्यशालाओं तथा कैरियर काउन्सलर आदि की सहायता भी ले सकता है। आज के औद्योगिक व प्रतिस्पर्धात्मक युग में किशोर–किशोरियों को चाहिये कि केवल उपाधियाँ लेकर उच्च शिक्षा अर्जित करने में समय नष्ट करने के बजाय अपने कौशल को परख कर रोजगार परक व्यावसायिक शिक्षण प्राप्त करें ताकि समय रहते स्वरोजगार के लिये गंभीरता पूर्वक प्रयास करें।

मानव संतति समाज की आधारशिला है। सन्तति को जन्म देना मानव का स्वाभाविक कर्म है। परिवार समाज की एक इकाई है। परिवार निर्माण के लिये विवाह आवश्यक है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में गृहस्थ जीवन भी अपने आप में एक कैरियर के समान है।

किशोरावस्था ही वह समय है जब तरूण किशोर/किशोरी एक भावी युवा बनने को तत्पर है। इसी समय भावी व्यवसाय की तैयारी के साथ–साथ वे स्वयं को एक गृहस्थ जीवन के लिये भी तैयार कर रहे होते हैं। पिछले अध्यायों में आप पढ़ चुके हैं कि किशोरावस्था में तीव्र शारीरिक वृद्धि के साथ–साथ यौन विकास भी चरमोत्कर्ष पर होता है। स्वयं के भीतर होने वाले इन शारीरिक परिवर्तनों के कारण किशोर बाल्यावस्था से एकदम बड़े होकर नवयुवक व नवयुवती के रूप में दिखाई देते हैं। किशोरों के भीतर यह अहसास घर करने लगता है कि अब वे बड़े हो गये हैं। इसी दौरान इनमें विपरीत लिंग के लिये आकर्षण भी बढ़ता है तथा वे अपने भावी जीवन साथी को लेकर रंग बिरंगे सपने बुनने लगते हैं। किशोरवय के प्रारम्भ में जीवन साथी का चुनाव आकर्षण, पहनावे व चकाचौंध से प्रभावित होता है किन्तु बढ़ती उम्र के साथ–साथ आकर्षण वाली बात खत्म हो जाती है। अब वे गंभीरता पूर्वक अपने जीवन साथी

के बारे में विचार करते हैं जो कि उनकी अभिलाषाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं एवं सामाजिक–आर्थिक रूप से सक्षम सुरूचिपूर्ण लड़कियों को पसंद करते हैं तो किशोरियाँ पौरूष युक्त, साफ–सुथरे, परिहास की वृत्ति वाले धीर–गंभीर व आर्थिक रूप से सक्षम लड़कों को पसंद करती हैं।

बच्चो के किशोरावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही माता–पिता व अन्य बड़ों का व्यवहार भी उनके प्रति बदलने लगता है। वे अब बालकों को विविध छोटे–मोटे कार्यों की जिम्मेदारी देने लगते हैं तथा उनसे बड़प्पन के व्यवहार की उम्मीद की जाती है। पुरातन काल में तो विवाह सम्बन्ध अल्पवय अर्थात बाल्यावस्था में ही हो जाते थे तब किशोर वय आते–आते उन पर घर गृहस्थी के उत्तरदायित्व स्वयंमेव ही आ जाते थे। अब विवाह संबंध बाल्यावस्था में नहीं किये जाते हैं फिर भी बड़े होते किशोर बालक–बालिका, माता–पिता का ध्यान इस संबंध में बरबस ही खींचते रहते हैं। आपने कई बार घर में माँ, दादी आदि बुजुर्गों को किशोरियों को बचपन की शैतानियों, मनोवृत्तियों पर टोका टोकी करते देखा होगा जैसे – लड़कियों को ऊँची आवाज में बात करना या हँसी ठठ्ठा करना शोभा नहीं देता या साँझ ढ़ले बाद घर से बाहर अकेले नहीं जाना इत्यादि। इसके अतिरिक्त लड़कियों को अच्छी रसोई बनाना, सिलाई–कढ़ाई करना एवं अन्य घरेलू कामकाज करना आदि सिखाया जाता है। इन सब बातों के पीछे महिलाओं की सोच होती है कि किशोरियों को जल्दी ही विवाह करके दूसरे घर जाना है अतः उन्हें ये सब कामकाज एवं सलीके सीखने चाहिये। इसी प्रकार बड़े होते किशोरों से भी उम्मीद की जाती हैं कि वे अपने व्यवसाय को सुनिश्चित कर किसी भी प्रकार की नौकरी या काम धंधे से जुड़ें एवं जीविकोपार्जन की व्यवस्था करें ताकि उनका विवाह किया जा सके।

आधुनिक युग में वैवाहिक तैयारी के इन मानदण्डों में कुछ परिवर्तन आ गये हैं। अब माता–पिता के लिये किशोर–किशोरियों के विवाह से पूर्व उन्हें अच्छी शिक्षा दीक्षा दिलवाकर अपने पैरों पर खड़ा करना मुख्य उद्देश्य हो गया है। किशोरों में स्वप्नदोष व किशोरियों में मासिक स्त्राव प्रारम्भ होने के बाद (जो कि इस अवस्था के मुख्य लक्षण हैं) माता–पिता या बड़े बुजुर्गों का यह प्रयास रहता है कि किशोरों का ध्यान लैंगिक रुचियों से हटाकर स्वयं के व्यक्तित्व निर्माण, अच्छी शिक्षा अर्जित करने व व्यवसाय विशेष में भली भांति जमने में लगे जिससे वे शीघ्र ही आत्मनिर्भर होकर अपने फैसले स्वयं कर सकें। उक्त व्यवस्था का दूसरा पहलू यह भी है कि आज के युवक युवतियाँ अधिक से अधिक पैसा व प्रतिष्ठा अर्जित करना चाहते हैं तथा विवाह आदि संबंधों को बंधन समझकर इनसे दूर भागने लगे हैं। विवाह बड़ी उम्र में होने लगे हैं, फलतः उच्च शिक्षित व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर युवती विवाह के बाद दूसरे परिवार में आसानी से सामंजस्य नहीं बैठा पाती है। इसी कारण आजकल विदेशों में तो वैवाहिक तैयारियों के लिये भी कार्यशालाएँ आयोजित की जाने लगी हैं जहाँ किशोर/किशोरियों को भावी पति व पत्नी बनने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे पता चलता है कि न केवल व्यावसायिक बल्कि वैवाहिक क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करने के लिये किशोर–किशोरियों का स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करना आवश्यक है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. अपने जीवनवृत्ति या कैरियर का चुनाव करना किशोरों के जीवन का सर्वाधिक मुश्किल व महत्त्वपूर्ण कार्य है।
2. किशोर अपने कैरियर का चुनाव करने हेतु कई प्रश्नों से जूझता है क्योंकि कैरियर ही आगे चलकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण करता है।
3. तरूण किशोरों के लिये कैरियर चुनना अत्यन्त कठिन कार्य होता है क्योंकि उनका दृष्टिकोण

यथार्थवादी और व्यावहारिक न होकर आदर्शवादी होता है जबकि बड़े किशोर अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को पहचान कर कैरियर विशेष के लिये प्रयास करते हैं तथा उनका दृष्टिकोण यर्थाथवादी एवं व्यावहारिक होता है।

4. कैरियर चुनाव में माता–पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि माता–पिता प्रतिष्ठित नौकरियों में कार्यरत होते हैं तो वे किशोर/किशोरी के लिए आदर्श सिद्ध होते हैं।

5. विद्यालय में प्राप्त होने वाले अच्छे–बुरे अनुभव किशोर/किशोरियों के कैरियर को प्रभावित करते हैं। विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षक बच्चों की रुचियों, क्षमताओं एवं व्यक्तिगत विशेषताओं को पहचान कर उनके भविष्य को एक आकार प्रदान कर सकते हैं।

6. आजकल व्यावसायिक शिक्षण कार्यशालाएँ तथा कैरियर सलाहकार छात्र–छात्राओं को उनकी रुचियों एवं योग्यताओं से अवगत करा उनके कैरियर चुनने के कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

7. किशोरों द्वारा व्यवसाय के चयन को सामाजिक अपेक्षाएँ भी प्रभावित करती हैं।

8. आधुनिक युग में किशोर/किशोरियों का विविध व्यवसायों के लिए आकर्षित करने व प्रेरित करने में मीडिया जैसे टेलिविजन, इन्टरनेट आदि का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

9. किसी भी व्यवसाय में सफलता एवं प्रतिष्ठा पाने के लिए क्षेत्र विशेष में रुचि होना या उसके अनुरूप योग्यताओं का होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि यह आवश्यक है कि पंसदीदा क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हों।

10. किशोर/किशोरियों को चाहिए कि वे अपने कौशल को परख कर, रोजगार परक व्यावसायिक शिक्षण प्राप्त कर समय रहते रोज़गार के लिये गंभीरता पूर्वक प्रयास करें।

11. किशोरावस्था ही वह समय है जब तरूण किशोर/किशोरी एक भावी युवा बनने को तत्पर है। इसी समय भावी व्यवसाय की तैयारी के साथ–साथ वे स्वयं को एक गृहस्थ जीवन के लिए भी तैयार कर रहे होते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) किशोरों के जीवन का सबसे कठिन एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है :

(अ) पैसे कमाना (ब) पढ़ाई करना

(स) कैरियर चुनना (द) उपरोक्त सभी

(ii) एक बड़े किशोर के दृष्टिकोण होते हैं :

(अ) यथार्थवादी और व्यावहारिक (ब) आदर्शवादी

(स) आशावादी (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(iii) किशोर/किशोरी के कैरियर चुनने में मुख्य भूमिका निभाते हैं :

(अ) माता–पिता (ब) शिक्षक

(स) विद्यालय एवं समाज (द) उपरोक्त सभी

(iv) यदि पुत्र अपने पिता का कैरियर चुनता है, तो उसे कहते हैं

(अ) मजबूरी (ब) वंशानुगतता

(स) छान–बीन (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) विदेशों में वैवाहिक तैयारियों के लिये आयोजित की जाती हैं :

(अ) कार्यशालाएं (ब) हवन

(स) सम्मेलन (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) कैरियर का चुनाव आजकल न केवल लड़कों बल्कि .... के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।

(ii) किशोरों के लिये पैसा एक मात्र साधन है जिसका साध्य है ....।

(iii) उच्च शिक्षित माता–पिता के घर का वातावरण भी बच्चों की शैक्षणिक .... व .... को विकसित करता है।

(iv) किशोर/किशोरियों को अपनी .... तथा .... को देखकर कैरियर का चुनाव करना चाहिये।

(v) किशोरावस्था के समय किशोर व्यवसाय के साथ–साथ स्वयं को एक .... जीवन के लिये भी तैयार कर रहे होते हैं।

(vi) पुराने ज़माने में विवाह संबंध .... अर्थात् बाल्यावस्था में ही हो जाते थे।

3. एक किशोर/किशोरी अपने कैरियर का चयन किस प्रकार करे? समझाइये।

4. विद्यालय एवं माता–पिता किशोरों के कैरियर चुनाव को किस तरह प्रभावित करते हैं?

5. स्वयं का कौशल, योग्यता एवं अभिवृत्ति कैरियर चुनने में किस प्रकार मदद करते हैं?

6. आधुनिक युग के माता–पिता एवं किशोरों में विवाह संबंधी विचार धाराओं में क्या परिवर्तन आए हैं? समझाइये।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) अ (iii) द (iv) ब (v) अ

2. (i) लड़कियों (ii) स्वतंत्रता (iii) रुचियों, दृष्टिकोण (iv) रुचि, योग्यताओं (v) गृहस्थ (vi) अल्पवय